अटारी, कोलकाता में वास्तविक समय भुगतान के युग में वित्त का कुशल संचालन पर संवादात्मक बैठक आयोजित

11 जनवरी, 2024, कोलकाता

भाकृअनुप- कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान, कोलकाता (अटारी, कोलकाता) ने आज "वास्तविक समय भुगतान के युग में वित्त का कुशल संचालन" पर एक संवादात्मक बैठक का हाइब्रिड मोड में आयोजन किया। अटारी कोलकाता के वैज्ञानिकों, अधिकारी एवं कर्मचारी के अलावा पश्चिम बंगाल, ओडिशा और अंडमान और निकोबर द्वीप समूह के कृषि विज्ञान केंद्र के प्रमुख, आहरण एवं संवितरण अधिकारी, वित्त एवं प्रशासनिक कर्मचारी ने भाग लिया।

कार्यक्रम के दौरान अपने विचार-विमर्श में, श्री जी.पी. शर्मा, संयुक्त सचिव (वित्त), भाकृअनुप, नई दिल्ली ने बताया कि आईसीएआर द्वारा तैयार किए गए ऑनलाइन वित्तीय प्रबंधन का सभी संस्थानों और कृषि विज्ञान केंद्रों द्वारा पालन किया जाना चाहिए। अपने भाषण में उन्होंने वित्तीय प्रबंधन में क्या करें और क्या न करें इसके बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने सार्वजनिक वित्तीय प्रबंधन प्रणाली के साथ-साथ ट्रेजरी सिंगल अकाउंट सिस्टम के बारे में भी चर्चा की। उन्होंने इस तरह के सार्थक कार्यक्रम के आयोजन के लिए अटारी, कोलकाता के प्रति गहरी संतुष्टि व्यक्त की।

संस्थान के निदेशक डॉ. प्रदीप डे ने अपने अध्यक्षीय भाषण में बताया कि वास्तविक समय के भुगतान ने वित्तीय लेनदेन की गति और सुविधा को बदल दिया है, जिससे वित्त प्रबंधन के लिए समान रूप से कुशल दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है। उन्होंने कहा कि किसी भी विसंगति की तुरंत पहचान करने के लिए वास्तविक समय की निगरानी और नकदी प्रवाह प्रबंधन की तत्काल आवश्यकता है। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि डिजिटल भुगतान को अपनाने से प्रसंस्करण समय में काफी कमी आ सकती है, मैन्युअल त्रुटियां कम हो सकती हैं और भुगतान चक्र में तेजी आ सकती है और इस तरह दक्षता में वृद्धि हो सकती है। उन्होंने कहा कि वास्तविक समय का डिजिटल भुगतान भारत को एक विकसित राष्ट्र बनाने और 2047 तक राष्ट्र की आकांक्षाओं को पूरा करने में मदद करेगा।

डॉ. पी.जे. मिश्रा, डीन एक्सटेंशन एजुकेशन, उड़ीसा यूनिवर्सिटी ऑफ एग्रीकल्चर एंड टेक्नोलॉजी, भुवनेश्वर और डॉ. केशव चंद्र धारा, उप निदेशक (फार्म), पश्चिम बंगाल पशु एवं मत्स्य विज्ञान विश्वविद्यालय, कोलकाता सहित कुल 74 लोगों ने कार्यक्रम में भाग लिया। एक प्रश्नोत्तरी सत्र भी आयोजित किया गया जहां प्रतिभागियों के प्रश्नों का उत्तर दिया गया। डॉ. पी.पी. पाल, प्रधान वैज्ञानिक ने कार्यक्रम का संचालन किया और धन्यवाद ज्ञापित किया।